संस्कृत वाङ्मय में नाट्यशास्त्र

*डॉ. बंशी धर रावत

शोध सारांश

नाट्यशास्त्र से सम्बन्धित ग्रन्थों के अध्ययन एवं चिन्तन–मनन से यह विदित होता है कि आचार्य भरत के पूर्व भी अनेक नाट्याचार्य हुये हैं जिनकी एक लम्बी परम्परा रही है । आचार्य भरत ने स्वयं अपने नाट्यशास्त्र में अनेक नाट्याचार्यों का उल्लेख किया है जिनमें ब्रह्मा, शिव, पार्वती, स्वाति, नारद, कोहल, वात्स्य, शाण्डिल्य, धूर्तित (दत्तिल), कश्यप, बृहस्पति, नखकुट्ट–अश्मकुट्ट, बादरायण, शातिकर्णी आदि प्रमुख है। पाणिनी की अष्टाध्यायी से ज्ञात होता है कि भरत से पूर्व कृशाश्व और शिलालि नाम के नाट्याचार्यो की दो परम्पराएँ विद्यमान थी। इनमें शिलालि प्रोक्त नटसूत्र का अध्ययन करने वाले शैलालिन् कहलाते थे। दूसरे कृशाश्व की परम्परा में जो दीक्षित होते थे, वे 'कृशाश्विन्' कहलाते थे।

नाट्यशास्त्र

संस्कृत वाङ्मय में नाट्यशास्त्र का महत्वपूर्ण स्थान हैं। इस ग्रंथ में नाट्यशास्त्र की विविध विधाओं का जितना सांगोपांग विवेचन किया गया है उतना अन्य ग्रन्थों में नहीं। आचार्य भरत के अनुसार लोक का जो सुख–दुःखात्मक स्वभाव जब अंगादि अभिनयों से अभिनीत होता है तो 'नाट्य' कहलाता है और नाट्य का शास्त्र नाट्य–शात्र है। कुछ नाट्याचार्य आंगिकादि चतुर्विध अभिनयोपेत रसाभिव्यक्ति के कारणभूत नर्तन को 'नाट्य' कहते हैं। इस प्रकार दशरूपकों के लक्षण आदि का प्रतिपादक शास्त्र नाट्य शास्त्र है।

नाट्यशास्त्र के अनुसार नाट्य का अर्थ 'भरत' है और उनके सहायक भी 'भरत' कहलाते हैं तथा भरतों का शास्त्र भरतशास्त्र या नाट्यशास्त्र है। शारदातनय के अनुसार नाट्य को भरत (धारण) करने के कारण अभिनेताओं को भरत कहा जाता था। एक अन्य व्याख्या के अनुसार भाषा, वर्ण, उपकरण, नाना प्रकृति सम्भव वेष, वय, कर्म और चेष्टा आदि को भरण (धारण) करने के कारण वे 'भरत' कहे जाते थे। इस प्रकार नटन करने वाले वर्ग के लिए 'भरत' शब्द का प्रयोग किया जाता था। अथवा भरत के वंशजों को नट कहा जाता था, जिनका कार्य नट एवं नर्तन था। इस प्रकार भरतों अर्थात् नटों के शास्त्र शासन के उपायभुत ग्रन्थ का नाम 'नाट्यशास्त्र' है। (भरतानां नटानां शास्त्रं शासनोपायं ग्रन्थम्–नाट्यशास्त्रं)। कोषादि ग्रन्थों में भरत को 'नट' कहा है। व्याकरण शास्त्र के अनुसार भी 'भरत' शब्द का अर्थ 'नट' है और कालान्तर में नाट्य प्रयोक्ता को भी 'नट' है और कालान्तर में नाट्य प्रयोक्ता को भी 'नट' कहा जाने लगा।

अभिनव गुप्त के अनुसार भी समुदाय रूप अर्थ 'नाट्य है' और वह (नाट्य) लौकिक पदार्थों से भिन्न अलौकिक रसात्मक वस्तु है। नटों या भरतों की एक परम्परा के द्वारा 'नाट्यशास्त्र' का सम्पादन किया गया, जो भरत नाट्यशास्त्र के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस ग्रन्थ में अनेक नाट्याचार्यों भरतों (नटों) के मतों एवं विचारों का संग्रह

हुआ है, जो नाट्य का एक शासनभूत ग्रन्थ है। इस प्रकार अभिनव गुप्त के अनुसार नाट्य का अर्थ नटवृत्त है और नाट्य का शास्त्र शासनोपाय ग्रन्थ 'नाट्यशास्त्र है'

नाट्यस्य नटवृत्तस्य शास्त्रं शासनोपायं ग्रन्थम्।(नाट्यशास्त्रम्)

अभिनवगुप्त के अनुसार नाट्यशास्त्र नाट्यवेद का पर्याय है। वेद शब्द का अर्थशास्त्र है। इस प्रकार का वेद–शास्त्र नाट्यशास्त्र है। एक अन्य व्याख्याकार के अनुसार अनुकरण रूप दशरूपक ही 'नाट्य' है। जिस शास्त्र (वेद) में दशरूपकों के लक्षणादि का प्रतिपादन हो, उसे नाट्यशास्त्र कहते है।

नाट्यशास्त्र का स्वरूप

प्राचीन ग्रन्थों में नाट्यशास्त्रों की दो संहिताओं का उल्लेख मिलता है– प्रथम द्वादशसाहस्री संहिता एंव द्वितीय षट् साहस्री संहिता। शारदातनय और उनके परवर्ती आचार्यों ने नाट्यशास्त्र की दोनो परम्पराओं का उल्लेख किया है। शारदातनय के द्वादशसाहस्री संहिता में बारह हजार श्लोक थे और षट्साहस्री संहिता में छः हजार श्लोक थे। प्रो. रामकृष्ण कवि का कथन है कि द्वादशसाहस्री संहिता की रचना वृद्ध भरत ने की थी जिसको भरत ने संक्षिप्तीकरण कर छः हजार श्लोको में नाट्यशास्त्र बनाया। वे द्वादशसाहस्री संहिता का पाठ अधिक प्राचीन मानते हैं राघव–भट्ट अभिज्ञान शाकुन्तलम् की टीका में दोनों संहिताओं से उद्धरण उद्धृत् किये हैं बहुरूप मिश्र ने दशरूपक की टीका में द्वादशसाहस्रीकार और षट्साहस्रीकार दोनों को उद्धृत् किया है। इससे स्पष्ट परिलक्षित होता है। प्राचीन काल में द्वादशसाहस्री नाट्यशास्त्र का वृहद् रूप अवश्य विद्यमान था; जिसका संक्षिप्त रूप छः हजार श्लोको का वर्तमान नाट्यशस्त्र है; जिस पर अभिनव भारती नामक टीका लिखी है। अभिनव गुप्त ने अभिनवभारती की प्रस्तावना के द्वितीय श्लोक में ' षद्त्रिंशक' भरतसूत्रमिदं 'विवृण्वन' तथा अभिनव भारती प्रथम–भाग, पृष्ठ आठ पर 'मध्ये षट्त्रिंशदध्याय्यां' लिखा है, जिससे ज्ञात होता है कि अभिनव को जिस रूप में नाट्यशास्त्र प्राप्त था, उसमें छत्तीस अध्याय थें।

नाट्यशास्त्र के मुद्रित संस्करणों एवं हस्तलिखित प्रतियों के अध्यायों की संख्या, श्लोक संख्या एवं उनके क्रम में एकरूपकता नहीं पाई जाती। नाट्यशास्त्र के काशी संस्करण में छत्तीस अध्याय और काव्यमाला संस्करण में भी सैतींस अध्याय है। अभिनव भारती के प्रकाशित गायकवाड़ संस्करण में सैतीस अध्याय है। अभिनव ने छत्तीस अध्याय वाले संस्करण को प्रमाणिक माना है, यद्यपि उन्होने सैतींसवें अध्याय पर भी टीका लिखी है।

नाट्यशास्त्र में वर्णित विषयसामग्री की समीक्षा के पश्चात् यह स्पष्ट होता है कि नाट्यशास्त्र एक संग्रह ग्रन्थ है। इसमें अनेक नटों, भरतों, नाट याचार्यों के विचारों एवं सिद्धान्तों का संग्रह किया गया है। शारदातनय के अनुसार सम्भवतः यह पाँच भरतों के सिद्धान्तों का संग्रह ग्रन्थ है।

नाट्यशास्त्र के संस्करण

सर्वप्रथम डॉ. एच. एच. विल्सन ने 1826–27 ई. कलकत्ता से एक संग्रह ग्रन्थ प्रकाशित किया, जिसकी भूमिका में उन्होने स्वीकार किया है कि 'नाट्यशास्त्र' जिसके उद्धरण अनेक ग्रन्थों और टीकाओं में प्राप्त होते है, सदा के लिए लुप्त हो चुके है। विल्सन की इस निराशाजनक घोषणा के चालीस वर्ष बाद 1865 ई. में एफ. हाल. को घनञ्जय के दशरूपक का अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित करते समय एक त्रुटिपूर्ण पाण्डुलिपि प्राप्त हो गई थी । हाल ने उस पाण्डुलिपि के आधार पर अट्ठारहवें, उन्नीसवें, बीसवें एवं चौबीसवें अध्याय को दशरूपक के परिशिष्ट के रूप में प्रकाशित कराया । इसके बाद जर्मन विद्वान हेमान ने 1874 ई. में नाट्यशास्त्र पर एक परिचयात्मक लेख मोटिंगन नगर की 'विज्ञान–परिषद' का पत्रिका में प्रकाशित कराया।

इसके बाद फ्रैन्च विद्वान् रेग्नों ने 1880 ई. में नाट्यशास्त्र के सत्रहवें अध्याय का, 1884 में पन्द्रहवें, सोलहवें, छठें एवं सातवें अध्याय का फ्राँसीसी अनुवाद सहित प्रकाशन कराया। इसके बाद रेग्नों के शिष्य ग्रोसे ने 1888 ई. में अट्ठाइसवें अध्याय का, 1898 ई. में 1 से 14 अध्याय तक का प्रकाशन कराया[3]। इस बीच फ्राँस के संस्कृत विद्वान् सिल्वालेवी ने 1809 ई. में 'इण्डियन थियेटर' नामक अपने ग्रन्थ में नाट्यशास्त्र पर एक विवेचनात्मक निबन्ध लिखा, जो 17वें, 20वें, एवं 24वें अध्याय से सम्बन्धित था। इस प्रकार पाश्चात्य विद्वानों द्वारा नाट्यशास्त्रों के उद्धार का कार्य होता रहा।

नाट्यशास्त्र का प्रथम भारतीय संस्करण 1894 ई. में काव्यमाला सीरीज में निर्णयसागर प्रेस, बम्बई से प्रकाशित हुआ। इस संस्करण में कुल 37 अध्याय हैं। यह नाट्यशास्त्र का सबसे प्राचीन मुद्रित संस्करण था। इसके (पश्चात्) नाट्यशास्त्र का एक और पूर्ण संस्करण चौखम्बा संस्कृत सीरीज, बनारस से प्रकाशित हुआ। इस संस्करण में कुल 36 अध्याय है। इसकी पाण्डुलिपि सरस्वती भवन ग्रन्थालय, संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी में सुरक्षित है। इस प्रकार ये दोनों ग्रन्थ नाट्यशास्त्र के पूर्ण संस्करण हैं।

इसके बाद प्रो. रामकृष्ण कवि और रामास्वामी शास्त्री ने 1934 से लेकर 1956 तक अनेक संस्करणों का प्रकाशन कराया। तदनन्तर प्रो. भानु ने नाट्यशास्त्र के कुछ अध्यायों का मराठी अनुवाद व मनमोहन घोष ने नाट्यशास्त्र के ही 1 से 27 आचार्यों का अंग्रेजी अनुवाद में प्रकाशन कराया। इसके अतिरिक्त आचार्य विश्वेश्वर, के.डी.वाजपेयी, अचार्य मधुसूदन शास्त्री, बाबू लाल शुक्ल एवं डॉ. पारसनाथ द्विवेदी ने विभिन्न संस्करणों का प्रकाशन कराया।

नाट्यशास्त्र का प्रतिपाद्य विषय एवं शैली

नाट्यशास्त्र के प्रथम अध्याय में नाट्योत्पत्ति के वर्णन के साथ नाट्य के स्वरूप एवं महत्व पर विचार किया गया है। द्वितीय अध्याय में नाट्यमण्डप के निर्माण की विधि तथा इसके नेपथ्य गृह, रंगपीठ, मत्तवारिणी, स्तम्भविधान, दासकर्म आदि का, तृतीय अध्याय में नाट्य मण्डप की रक्षा हेतु अनेक देवी देवताओं की पूजा विधि एवं वर प्राप्ति, चतुर्थ अध्याय में तण्डु द्वारा प्रयुक्त ताण्डव नृत्य, पंचम अध्याय में पूर्वरंग विधान, नान्दी, प्रस्तावना आदि का, षष्ठ अध्याय में रस का विवेचन, सप्तम अध्याय में भावों का शास्त्रीय दृष्टि से विवेचन, अष्टम अध्याय में अभिनय के चार भेद, नवम अध्याय में हस्ताभिनय, दशम् अध्याय में वक्ष, पार्श्व, कटि, उरू, जंघा तथा पैरों से किये जाने वाले अभिनय का, एकादश अध्याय में चारी निरूपण (आकाशचारी व भौमचारी का वर्णन), द्वादश अध्याय में चारियों के संयोग से बनने वाले मण्डलों के लक्षण, भेद, तथा प्रयोग आदि का, त्रयोदश अध्याय में गतिचार का, चतुर्दश अध्याय में कक्ष्या विभाग तथा प्रवृति व्यंजन, पंचदश अध्याय से उन्नीसवें अध्याय तक वाचिक अभिनव के सभी पक्षों का सांगोपांग विवेचन किया गया है।

बीसवें अध्याय में दशरूपकों का विस्तृत विवेचन, इक्कीसवें अध्याय में इतिवृत्त विधान, सन्धियों, पंच अवस्थाओं, अर्थप्रकृतियों एवं अर्थोपक्षेपकों का, बाईसवें में आहार्याभिनव, चौबीसवें अध्याय में समान्याभिनव का, पच्चीसवें अध्याय में वैशिक पुरूषों के गुणों, उसके मित्रों एवं दूती आदि की चेष्टाओं का, छब्बीसवें अध्याय में चित्राभिनय का, सत्ताईसवें में दैवी एवं मानुषी सिद्धियों का, अट्ठाईसवें अध्याय से चौतीसवें अध्याय तक संगीत शास्त्र से सम्बन्धित विषयों का, पैतीसवें अध्याय में पुरूष और स्त्रियों की तीन प्रकृतियों, चार प्रकार के नायकों तथा अन्तःपुर के परिजनों, छत्तीसवें और सैतीसवें अध्याय में नाट्यावतरण की कथा का वर्णन है।

शैली

नाट्यशास्त्र में प्राचीन काल में प्रचलित अनेक प्रकार की शैलियों का समन्वय है सम्पूर्ण नाट्यशास्त्र गद्य और पद्य प्रकार की शैलियों में निबद्व है। नाट्यशास्त्र मे सूत्र, भाष्य और निरूक्त तीनों शैलियों के गद्य मिलते है। पद्य

अधिकांशः अनुष्टुप् छन्द में है कुछ पद्य आर्या और उपजाति छन्दों में है।

अभिनव गुप्त के अनुसार सूत्र का अर्थ है– परिभाषा या लक्षण और उस सूत्र का स्पष्टीकरण रूप व्याख्या भाष्य या परीक्षा है (सूत्रं लक्षणं भाष्य तद्व्यक्तिकरण रूपा परीक्षा) अभिनव गुप्त के अनुसार सूत्र, श्लोक और लक्षण रूप अर्थ को कारिका कहा जाता है।

नाट्यशास्त्र का रचयिता एक या अनेक

भारतीय परम्परा भरत को नाट्यशास्त्र का रचयिता मानती है और उन्हें पौराणिक पुरूष बतलाती है। दशरूपक, भाव प्रकाशन, नाट्यदर्पण, रसार्णवसाधुकर, संगीतरत्नाकार आदि ग्रन्थों में भरत को नाट्यशास्त्र प्रणेता के रूप में स्मरण किया गया है।

नाट्यशास्त्र के प्रणेता एक या अनेक के विषय में आचार्यों व विद्वानों में मतैक्य नहीं हैं। नाट्यशास्त्र (काव्यमाला संस्करण) के अन्तिम अध्याय के अन्त में पुष्पिका लेख में 'समाप्तश्चायं ग्रन्थों नन्दि भरतसंगीत पुस्तकं' यह उल्लेख मिलता हैं इससे ज्ञात होता है कि नाट्यशास्त्र का उत्तर भाग, जिसका एक अंश संगीत विषयक है, का सम्पादन नन्दि भरत ने किया है। अभिनवगुप्त नन्दि भरत को एक व्यक्ति न मानकर नन्दि और भरत दो व्यक्ति मानते हैं और उनका अपर नाम तण्डु तथा मुनि बतलाते है (तण्डुमुनि शब्दौ नन्दि भरतयोरपर नामनी) इस प्रकार नाट्यशास्त्र नन्दि और भरत दोनों की संयुक्त रचना प्रतीत होती है।

एक अपर परम्परा नाट्यशास्त्र की रचना का श्रेय ब्रह्मा को देती है। उनके अनुसार ब्रह्मा ने नाट्यवेद की रचनाकार प्रयोग के लिए भरत को सिखाया और भरत ने अपने पुत्रों के साथ उसका प्रयोग ब्रह्मा नाट्यशास्त्र के रचयिता है और भरत नाट्यप्र योक्ता हैं ?

कुछ टीकाकारों के कथनानुसार नाट्यशास्त्र के प्रथम छः श्लोकों की रचना भरतमुनि के किसी शिष्य ने की है, क्योंकि वहाँ भरत मुनि का अन्य पुरूष के रूप में प्रयोग है और कोई भी ग्रन्थकार अपने को अन्य पुरूष नहीं बता सकता। इसी प्रकार छत्तीस अध्यायों में जो प्रश्नोत्तर शैली की योजना हुई है, वे सब उनके शिष्यों के वचन है। किन्तु अभिनव गुप्त का कथन है कि प्रश्नोत्तर शैली कि यह योजना श्रुति, स्मृति, व्याकरण, तर्कशास्त्र आदि में भी है। वहाँ प्रश्न के रूप में पूर्वपक्ष तथा उत्तरपक्ष सिद्धान्तों स्थापना की जाती है। एक ही आचार्य पूर्वपक्ष और उत्तर पक्ष दोनों प्रस्तुत करते हैं अतः प्रश्नोत्तर शैली के आधार पर नाट्यशास्त्र के उन अंशों को उनके शिष्यों का वचन मानना युक्तिसंगत प्रतीत नहीं होता।

तमिल भाषा में एक रचना मिलती है जिसका नाम हैः–

'पंचभरतम्। जिसमें भरत से सम्बन्धित पाँच नाम है– आदिभरत (वृद्वभरत), नन्दिभरत, मतंगभरत, अर्जुनभरत और हनुमद्वरत। शारदातनय को 'पंचभारतीयम्' के अस्तित्व का पता था। सम्भवतः यही ग्रन्थ होगा जिसमें वृद्धभरत, नन्दिभरत, कोहलभरत, दत्तिलभरत और मतंगभरत के सिद्धान्तो का सम्पादन हुआ। इन पाँचों का भरण (धारण) किया था, इसलिए वे भरत कहलाये। शारदातनय के अनुसार इसी परम्परा के किसी भरत ने अपने पूर्ववर्ती भरतों के सिद्धान्तों का सार ग्रहण कर एक नाट्य संग्रह तैयार किया जो नाट्यशास्त्र के नाम से प्रसिद्ध हुआ और बाद में वह भरत नाट्यशास्त्र के नाम से प्रसिद्ध हो गया।

नाट्यशास्त्र के उपर्युक्त साक्ष्यों के आधार पर ज्ञात होता है कि पूर्व में भरतों की एक परम्परा रही है। इस परम्परा में नाट्य और संगीत सम्बन्धी अनेक ग्रन्थों की रचना हुई। इसी परम्परा के किसी आचार्य ने उन सभी ग्रन्थों से सार लेकर एक सुव्यवस्थित संग्रह ग्रन्थ सम्पादित किया जो नाट्यशास्त्र के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस प्रकार

नाट्यशास्त्र एक संग्रह ग्रन्थ है जिसमें अनेक आचार्यो, भरतों के मतों एंव विचारों का संग्रह है। इसका सम्पादन किसी एक भरत ने किया होगा और यह भरतकृत मान लिया गया होगा। इस प्रकार यह अनेक भरतों का शास्त्र शासन का उपायभूत ग्रंन्थ है (भरतानां शास्त्रं शासनोपायं ग्रंन्थम्)। इन सभी मतों विचारों एंव मान्यताओं का डॉ. पारसनाथ द्विवेदी कृत 'नाट्यशास्त्र का इतिहास' पुस्तक में विस्तार से उल्लेख किया।

इस प्रकार प्रस्तुत शोध–प्रत्र में नाट्यशास्त्र का सामान्य परिचय, उसका स्वरुप नाट्यशास्त्र के संस्करण, उसका प्रतिपाद्य विषय एंव शैली तथा इसके रचयिता एक है अथवा अनेक इस विषय पर विस्तार किया गया है।

प्रस्तुत शोध पत्र चाह करके भी सर्वांगपूर्ण नहीं बन पाया है। फिर भी यथाशक्य नाट्यशास्त्र की विवेचना की गई है।

***व्याख्याता**
संस्कृत विभाग
स्व. राजेश पायलट
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
बाँदीकुई (दौसा)

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. नाट्यशास्त्र का इतिहास –डॉ. पारस नाथ द्विवेदी
2. संस्कृत साहित्य का इतिहास – काणे
3. संस्कृत नाटकः मूल लेखक – ए.बी.कीथ, अनुवादक–डॉ.उदयभानु सिंह
4. नाट्यशास्त्रः एम.एम.धोष
5. संस्कृत साहित्य का इतिहासः बलदेव उपाध्याय
6. काव्यशास्त्रः डॉ. भागीरथ मिश्र
7. नाट्यशास्त्र– भरत मुनि
8. अभिनव नाट्यशास्त्रः पं. सीता राम चतुर्वेदी
9. भारतीय नाट्यशास्त्र की परम्परा और दशकरुप–डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, 1962
10. 'संस्कृत नाट्यशास्त्र – एक पुनर्विचार जयकुमार 'जलज', 1962
11. संस्कृत साहित्य का इतिहास (भाग–1) डॉ. मैक डॉलन, अनुवादक– चारु चन्द्र शास्त्री, 1962